IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19997984
ISSN : 3048-6971

चंदन पाण्डेय की कहानी 'भूलना' में भूमंडलीकरण से संबंधित प्रतीकात्मकता और विमर्श

पंकज पाण्डेय
शोधार्थी- हिन्दी विभाग
कुमाऊँ विवि, नैनीताल

शोध सार

दुनिया को आपस में जोड़ने की प्रक्रिया के रूप में भूमंडलीकरण वैश्विक समुदायों के मध्य आर्थिक, सांस्कृतिक, तथा तकनीकी दूरी कम करता है। एक ओर भूमंडलीकरण आर्थिक उन्नति, रोजगार; तकनीकी प्रगति; शिक्षा, ज्ञान तथा सांस्कृतिक आदान प्रदान; वैश्विक सहयोग तथा मानवीय सहायता के अवसर प्रदान कराता है तो दूसरी ओर, अपनी नकारात्मक छवि के रूप में जीवन को यांत्रिक और उपभोक्तावादी बनाते हुए निजीकरण तथा पर बल देता है। भूमंडलीकरण मीडिया के माध्यम से डर और असुरक्षा का माहौल तैयार करता है तथा सुरक्षा उद्योग, निगरानी तथा नियंत्रण की व्यवस्था को वैधता प्रदान करता है। भूमंडलीकरण से उपजी हुई घोर प्रतिस्पर्धा पढ़े-लिखे लोगों को हाशिए पर ढकेलती है और सामाजिक मूल्यों का क्षरण करती है। चंदन पांडेय की कहानी 'भूलना' माँ द्वारा अपने बेटे को भुला दिए जाने की असंभव सी लगने वाली घटना (हाइपररियल) के आधार पर भूलने और आतंकवाद के साथ-साथ भूमंडलीकरण के सामयिक स्याह पक्षों को सामने रखती है। यह कहानी न केवल अपने कथ्य से बल्कि शिल्प से भी अभीष्ट मध्यवर्गीय त्रासद-कथा की रचना करती है।

बीज शब्द - भूमंडलीकरण, आतंकवाद, भूलना, मीडिया।

सम्पूर्ण विश्व को एकीकृत करने के रूप में शुरू हुई भूमंडलीकरण की प्रक्रिया पंद्रहवीं सदी से शुरू हुई। भूमंडलीकरण के प्रारंभिक चरण में विज्ञान चेतना, समुद्री यात्राएँ और उपनिवेशी विस्तार शुरू हुआ। बाद में क्रमश: औद्योगिक क्रांति, वैश्विक संस्थाओं के विकास तथा अंतर्राष्ट्रीय संचार ने इसे गति दी तथा दो विश्वयुद्धों के बाद शुरू हुए अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने दुनिया को पुनर्गठित करने के काम किया।[1] 1960 के दशक में वैश्विक ग्राम (ग्लोबल विलेज) की अवधारणा शुरू हुई [2,3] तथा 80 के दशक तक आते-आते संचार क्रांति, मीडिया और तकनीक के माध्यम से विश्व स्तर पर परस्पर निर्भरता बढ़ी। सोवियत संघ के विघटन ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया और अमेरिका नीत पूँजीवाद तीव्रता से अपनी जड़े दुनिया भर में जमाने लगा। इसी समय लागू हुई नई अर्थ-नीतियों से भारत भी विश्व-ग्राम का हिस्सा बन गया। नब्बे के दशक में डब्लूटीओ-वर्ल्ड बैंक की नीतियों, मुक्त व्यापार समझौतों, इंटरनेट तथा डिजिटलीकरण से उत्पादन के साथ-साथ सूचना, सेवा और पूँजी का वैश्विक प्रवाह तीव्र हुआ। पीटर वनहम तथा थॉमस फ्रीडमैन जैसे विद्वान भूमंडलीकरण के सबसे नए चरण की शुरुआत 21वीं सदी से मानते हैं।[4,5] इस चरण में भूमंडलीकरण की प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर तकनीक, इंटरनेट, कंप्यूटर, सॉफ्टवेर, एआई आदि के माध्यम से संचालित है, जिससे समय, दूरी, भाषा आदि की पारंपरिक बाधाएँ ख़त्म हो रही है। सुधीश पचौरी मानते हैं कि विश्व-बाज़ार को भूमंडलीकरण का सबसे बड़ा औजार है तथा सैटेलाइट तथा सूचना क्रांति इस विश्व बाज़ार व्यवस्था की सारथी है। डेटा सुरक्षा, आतंकवाद, पर्यावरणीय संकट, वैश्विक पहचान जैसी चुनौतियाँ भी इसी समय तीव्रता से पसर रही हैं।[6]

आतंकवाद अब सीमित भौगोलिक दायरे से निकलकर वैश्विक स्तर पर फैल चुका है। आधुनिक संचार, वित्तीय प्रणालियों और तकनीकी प्रगति ने आतंकवाद के लिए फंडिंग और संसाधनों के तेज़ हस्तांतरण को संभव बनाया है। वहीं सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार, भर्ती और नेटवर्किंग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठित हो रही है। साथ ही, उन्नत सैन्य तकनीक, ड्रोन, साइबर युद्ध और सूचना युद्ध ने वैश्विक सुरक्षा के स्वरूप और चुनौतियों को नया रूप दे दिया है। पूँजीवादी शक्तियों ने

भी अपनी असफलताओं को छिपाने तथा विभिन्न भू-राजनीतिक और आर्थिक हितों के संदर्भ में आतंकवाद को प्रमुख मुद्दे के रूप में उभारा और कई बार इसे इस्लाम से जोड़कर प्रस्तुत किया गया। इसी पृष्ठभूमि में उग्र इस्लामी समूहों द्वारा सितंबर 2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला किया गया, जिसने वैश्विक सुरक्षा और राजनीति की दिशा को बदल दिया। मीडिया के माध्यम से आतंकवाद के डिस्कोर्स का पूरी दुनिया में प्रसार हुआ। चंदन पांडेय की कहानी 'भूलना'[7] आतंकवाद के हालिया डिस्कोर्स को भूमंडलीकरण से संबंधित विषयों के साथ प्रस्तुत करती है। आतंकवाद यहाँ किसी संगठित 'दुश्मन' की छवि से नहीं, बल्कि उस साधारण विस्फोट से जुड़ा है जो एक आम गली में, एक अनजान लड़के के शरीर को स्थायी रूप से अपंग, अंधा और लगभग बहरा बना देता है।

कहानी में शुरुआत से ही आतंकवाद का प्रसंग भूमंडलीकृत युग में भय की राजनीति का प्रतीक है। आतंकवाद के संदर्भ में आतंकवाद के विमर्श को समझते हुए कथावाचक कहता है: "समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, शासन का बहाना सब कुछ आतंकवाद से शुरू होकर आतंकवाद पर ही समाप्त होता था।"[8] ग्लोबल मीडिया संस्कृति और सूचना तंत्र के वर्चस्व के चलते निम्नवर्गीय परिवारों में अनावश्यक भय और असुरक्षा पैदा करता है और जिससे वे अनेक प्रकार से प्रभावित होते हैं। स्कूली बच्चों को स्कूल में दिया गया "आतंकवाद: देश का अभिशाप" शीर्षक वाला पेपर इस राजनीतिक डिस्कोर्स और प्रोपेगेंडा से प्रेरित होकर दिया जाता है ताकि उन्हें भी इसका हिस्सा बनाया जा सके। इस पेपर के प्रश्न-

"1. आतंकवाद क्या है?

उत्तरः-

2. आतंकवाद से राष्ट्र को क्या नुकसान है?

उत्तरः-

3. आतंकवादियों की पहचान क्या है?

उत्तरः-

4. अगर कहीं आतंकवादियों से सामना हो जाये, तो आप क्या करेंगे?

उत्तरः-" [9]

आतंकवाद के इसी निर्मित डिस्कोर्स का प्रयोग कर नए एस.पी. के आदेश पर सुरक्षा गार्ड रखने की अनिवार्यता ने पारंपरिक रोजगार को नष्ट कर दिया। कथावाचक के पिता की सिनेमाहाल की दरबानी छूट गई, और उन्हें गुलाममंडी में दिहाड़ी मजदूरी करने को मजबूर होना पड़ा। यह भूमंडलीकृत समय में निजीकरण और क्रोनी पूँजीवाद की प्रक्रिया का प्रतीक है, जहाँ मुख्यमंत्री के करीबी व्यक्ति द्वारा संचालित 'बहादुर सुरक्षा फोर्स 'आतंकवाद के नाम पर सभी दुकानों में अपने गार्ड लगाना चाहती थी। यह निगरानी का पैनॉप्टिकॉन मॉडल [10,11] है जहाँ सुरक्षा कम और भय अधिक है। तीन व्यक्तियों के एक साथ खड़े होने पर लगने वाला प्रतिबंध भी डर को क़ायम करने के उद्देश्य से लगाया जाता है ताकि असुरक्षा का माहौल बने और मानवीय संबंधों को बाजार के माध्यम से नियंत्रित करने के साथ-साथ निगरानी व्यवस्था को वैधता दिलाने का मार्ग तैयार किया जा सके।

आतंकवाद का डिस्कोर्स हर व्यक्ति तक फैले इसके लिए हर छोटी घटना को आतंकवाद से जोड़ दिया जाता है। टायर फटने की घटना पर- "हम सबने पुलिस के लोगों को समझाया और वह मान भी गये पर जाते जाते उन लोगों ने रिक्शे में सीट हटा कर देखा, रिक्शे के नीचे देखा, कहीं बम तो नहीं है, हिदायत दी – टायर ट्यूब सही रखो नहीं तो डाल दिये जाओगे।"[12] साथ ही शहर के मौहाल में हमेशा तनाव बना रहे इसके लिए "हरेक पुलिसकर्मी को रोज एक अपराधी पकड़ना होता था।"[13] इसी तनाव का परिणाम था कि कथावाचक परछाई गुज़रने की सोच आर बुरी तरह डर गया और चीखने लगा। इसी बाथरूम का दरवाजा बंद होने को पिता ने आतंकवादी के भीतर घुसने से जोड़ दिया और "दूर हटो दूर हटो, वहाँ बम रखा होगा"[14] चीखने लगे। इकट्ठा हुई भीड़ ने बाथरूम को बाहर से लॉक कर दिया। जब तक वे यह समझ पाते कि अंदर 'गुलशन' है और लोगों को यह बता पाते तब

तक एक आम गली में, एक अनजान लड़के के शरीर को स्थायी रूप से अपंग, अंधा और लगभग बहरा बना देता है। घर के सभी लोगों द्वारा गुलशन को भुला दिया जाना वर्तमान दौर के विघटन का शक्तिशाली प्रतीक है। गुलशन दीवार की तरफ़ मुँह करके अपनी किताबों में व्यस्त रहा करता था किंतु भूमंडलीकृत स्थितियों से उपजी परिवार की सतत यांत्रिकता का परिणाम यह हुआ कि गुलशन को भुला दिया गया-

"गुलशन को लंबे समय तक भूले रहने का अंदाज़ा हमें उसके नाम से आए प्रवेशपत्र से हुआ था। देश के प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज की प्रवेश परीक्षा के लिए यह प्रवेशपत्र आया था। जिस दिन जनगणना करने वाले लोग हमारे घर आए तो सबसे पहले उन लोगों ने मकान नंबर पूछा था। घर के सदस्यों की बाबत घर के मुखिया के रूप में पिताजी का नाम, माँ का नाम, मेरा नाम तथा छोटी बहन का नाम बताया गया था।

***

कारण ये कि हम उसे इसलिए भूलने लगे थे क्योंकि उसने बोलना-चालना और कोई हस्तक्षेप करना बिल्कुल ही छोड़ दिया था।"[15]

महंगी हो रही शिक्षा को पाने के लिए गुलशन को तैयारी में इस हद तक डूबना होता है कि उसका अपना अस्तित्व तक समाप्त हो जाता है।

आतंकवाद के विमर्श के साथ शुरू हुई इस कहानी में पीड़ित गुलशन की समय के साथ देखभाल कम होती जाती है। चूँकि वह इस डिस्कोर्स के चलते केवल एक संख्या भर रह गया है, और अंधा और लगभग बहरा हो चुका है इसलिए दोस्त उसे क्रिकेट, शाहरुख़ खान की फिल्में, तमाम वैश्विक कल्चर के पॉपुलर मुहावरों को ज़ोर-ज़ोर से सुनाकर उसकी चेतना से जुड़ने की कोशिश करते हैं, पर अन्ततः सब इस सबसे ऊब जाते हैं, मानो वह केवल घटना का 'कोलेटरल डैमेज' भर हो-

"जिन दिनों गुलशन ऐसी हालत में पहुँचा था, उन दिनों हम सोचते थे कि जो कुछ भी महत्वपूर्ण घट रहा हो, उसे गुलशन को बताया जाना चाहिए। क्रिकेट की ख़बरें, फ़िल्मों की बातें, विशेष तौर पर शाहरूख ख़ान की फिल्मों की कहानियाँ हम उसके कान में चिल्ला-चिल्ला कर बताते थे। पर धीरे-धीरे हमारा उसकी इतनी सघनता से देखभाल करना कम होता गया।"[16]

भूमंडलीकरण के विमर्श से पीड़ित शरीर अक्सर संख्या और आंकड़ों में बदल जाते हैं [17]; कहानी में गुलशन इसी अमूर्त संख्या के बरअक्स एक अत्यंत ठोस, न छूटने वाली, फिर भी लगातार भुला दी जाने वाली देह बनकर उपस्थित है। मीडिया द्वारा प्रचारित आतंकवाद की वैश्विक शब्दावली के बीच निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन की बेकारी, भूख, साधारण जरूरतें, शिक्षा जैसे साधारण सवाल पीछे छूट जाते हैं। इन्हीं के चलते कथा नैरेटर अपने भीतर एक शोर लगातार सुनता है, आतंकवाद, सुरक्षा, नौकरी, गरीबी की आवाज़ें मिलकर स्थायी बेचैनी का शोर बन जाती हैं।

भूमंडलीकृत व्यवस्था ने पूरे परिवार को असंतुष्ट प्रतिस्पर्धात्मक उपभोक्तावादी संरचना में बदल दिया है। गुलशन के लिए तय की जा रही शिक्षा आवश्यकता-तंत्र द्वारा निर्मित है ताकि वह ख़ुद को बाज़ार के लिए तैयार कर सके। गुलशन की बेहतर शिक्षा, परिवार के बेहतर जीवन की चाह बाज़ार निर्मित सपनों का प्रतीक बन जाती हैं। गुलशन के बिना इंजीनियरिंग के अच्छी नौकरी पा लेने की बात पर कथावाचक सकपका जाता है, वह महसूस करता है कि

"हमारी भावी और भव्य योजनाओं पर भाई ने पानी फेरने की कोशिश की।" [18]

कहानी मीडिया के बड़े नैरेटिव की भी आलोचना है कि किस तरह पीड़ित व्यक्तियों के सामाजिक, शारीरिक, मानसिक पीड़ा को कहीं कोई जगह नहीं मिलती और उनके जीवन में एक स्थाई बहरापन और अँधेरा जगह बना लेता है। मीडिया स्मृतिहीनता को रचने के लिए हर चीज को सनसनी बना कर प्रस्तुत करती है। मीडिया के लिए पीड़ित व्यक्तियों का जीवन केवल सनसनी पैदा करने की सीमा तक ही महत्व रखता है। सनसनी ख़त्म होने पर नई सनसनी खोजने लगती है। बौद्रिलार्ड

के सिमूलाक्रा [19] की तरह मीडिया आतंकवाद के खतरे को वास्तविकता से अधिक के रूप में पेश करता है। यह आम जीवन में इस प्रकार घुसपैठ करता है कि काल्पनिक आतंकवाद और वास्तविक आतंकवाद का अंतर मिट जाता है।

कहानी अपने शिल्प से भी कथ्य को गहरा करती है। परिवार का गुलशन को लगातार भूलते जाना आधुनिक जीवन की व्यस्तता, बेरोजगारी के नगाड़े "घम घम घम। घम घम। घम।", और भीतरी संवाद की अनवरत चीख का परिणाम है। कथावाचक के मन में लगातार बज रही यह आवाज बताती है कि असफल जीवन कभी न रुकने वाले संघर्ष में बदल चुका है, असफल जीवन का अर्थ है अस्तित्वहीनता। कथा नैरेटर कहानी में कई-कई बार "मुझे याद है" कहता है। लेकिन पूरे परिवार को अमीर बनाने के लिए ग्लोबलाइजेशन की आधुनिक महंगी शिक्षा पाने के लिए बिना "कोचिंग-वोचिंग" के तैयारी कर रहे गुलशन को परिवार का व्यवहारिक स्तर पर भुला देना बताता है कि आज की भाषा में 'याद रखना' भी एक शब्द-अलंकार की तरह प्रयुक्त किया जा रहा है, जबकि वास्तविक स्मृति अनुपस्थित रहती है। कथावाचक कहता है "मेरे भीतर अदृश्य दृश्यों का भीषण घमासान भी है, जो मुझे बाहर कुछ भी देखने नहीं देता।"[20] यह मनोवैज्ञानिक अलगाव वैश्वीकृत दुनिया की तीव्र प्रतिस्पर्धा और आर्थिक दबाव का प्रतिफल है।आर्थिक उन्नति के सपनों वाले भूमंडलीकरण की यहाँ कहानी आलोचना करती है।

कहानी में सतत रूप से उपस्थित द्विआधारी विरोध [21] दिखता है। यह याद रखने-भूलने के रूप में पूरी कहानी में उपस्थित है। गुलशन की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति के बीच की रेखा अस्पष्ट सी रहती है। परिवार यह तय नहीं कर पाता कि-

> "हम, हम सभी, ठीक ठीक यह निर्णय करने की स्थिति में कभी नहीं रहे कि यह भूलना, आख़िरकार, किसकी तरफ़ से हो रहा था। गुलशन हमें भूल रहा था या हम गुलशन को भूल रहे थे।" [22]

कहानी ग़ैर-बराबरी को उत्तर-आधुनिक जक्सटापोज़ शैली का प्रयोग करके सामने रखती है। एक ओर कथा नैरेटर शोषण का शिकार है कि उसे माह भर का वेतन केवल दो सौ पचहत्तर रुपए मिलता है, वहीं दूसरी ओर 'सर्वेसर्वा 'अपनी लगभग जवान प्रेमिका की नाक की फुंसी के इलाज के लिए दिल्ली जा रहे हैं और गाड़ी की हेडलाइट फूटने पर सरकार लोगों को माथे पर गैस बत्ती लेकर गाड़ी के आगे दौड़ने का काम देती है। इसके लिए दस हज़ार रुपये प्रति मिनट की दर से भुगतान किया जाना तय किया गया है। यह उपभोक्तावादी विलासिता और गरीबों की जरूरत के बीच विषमता का मार्मिक और हाइपररियल [23] प्रतीक है। यह दृश्य दिखाता है कि कैसे सत्ताधारी तथा अमीर वर्ग की तुच्छ इच्छाओं के लिए आम लोगों को खतरनाक कामों में झोंक दिया जाता है। एक ओर 'सर्वेसर्वा' की प्रेमिका की फुंसी पर होने वाले दर्द है दूसरी ओर कथावाचक की बहन के सर में होने वाला विभत्स दर्द और पिता के पाँव में होने वाला असहनीय दर्द है। दोनों को मिल रहा ट्रीटमेंट भी ग़ैर-बराबरी के प्रति सत्ता के रवैये को चित्रित करता है।

निष्कर्ष

'भूलना' कहानी भूमण्डलीकरण के क्रूर रूप को सामने रखती है। यह ऐसी व्यवस्था का निर्माण करती है जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और यहाँ तक की मानवीय सम्बन्ध भी कमोडिटी बन जाते हैं। यह भूमण्डलीकरण की सांस्कृतिक सत्ता को भी चित्रित करती है जिसमें कथावाचक का परिवार गुलशन को 'भूलने' के अपराधबोध में रहता है किंतु शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सार्वजनिक व्यवस्था का निजीकरण होना, मनुष्य का वस्तुकरण, मीडिया द्वारा चलाई गई प्रोपोगेंडा खबर; आर्थिक तथा सामाजिक शोषण; निगरानी व्यवस्था आदि के समग्र जाल को समझने में असमर्थ होता है।

संदर्भ—

1. रोनाल्ड रॉबर्टसन, ग्लोबलाइजेशन: सोशल थ्योरी एंड ग्लोबल कल्चर, सेज पब्लिकेशन, 1990

2. मार्शल मैकलुहान, द गुटेनबर्ग गैलेक्सी: द मेकिंग ऑफ टाइपोग्राफिक मैन, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो प्रेस, 1962

3. मार्शल मैकलुहान, अंडरस्टैंडिंग मीडिया: दी एक्सटेंशन ऑफ़ मैन, द एमआईटी प्रेस, 1994

4. पीटर वनहम, ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ़ ग्लोबलाइजेशन, डब्ल्यूईएफ़, दिनांक 17 जनवरी, 2019 https://www.weforum.org/stories/2019/01/how-globalization-4-0-fits-into-the-history-of-globalization/ अं अ 30 जून, 2025

5. थॉमस फ्रीडमैन, द वर्ल्ड इस फ्लैट, पिकाडोर, न्यू यॉर्क, 2005

6. सुधीश पचौरी, भूमंडलीकरण के लिए नया शास्त्र चाहिए, परिवेश, अप्रैल 1995

7. चंदन पाण्डेय, भूलना, भारतीय ज्ञानपीठ, 2019

8. वही

9. वही

10. पनोप्टिकॉन, विकिपीडिया, https://hi.wikipedia.org/wiki/पनोप्टिकॉन अ अ 30 जून 2025

11. मिशेल फूको, डिसिप्लिन एंड पनिश, विंटेज बुक्स, 1995

12. चंदन पाण्डेय, भूलना, भारतीय ज्ञानपीठ, 2019

13. वही

14. वही

15. वही

16. वही

17. जीन बौड्रिलार्ड, द वॉयलेंस ऑफ़ द ग्लोबल, बौड्रिलार्ड नाउ, 5(1), विंटर 2024

18. चंदन पाण्डेय, भूलना, भारतीय ज्ञानपीठ, 2019

19. जीन बौड्रिलार्ड, सिम्यूलाक्रा एंड सिमुलेशन, सेमियोटेक्स्ट, 1983

20. चंदन पाण्डेय, भूलना, भारतीय ज्ञानपीठ, 2019

21. बाइनरी अपोजिशन, https://en.wikipedia.org/wiki/Binary_opposition

22. चंदन पाण्डेय, भूलना, भारतीय ज्ञानपीठ, 2019

23. हाइपरियालिटी https://en.wikipedia.org/wiki/Hyperreality